आधुनिक शिक्षण और वैदिक ज्ञान का सुंदर समन्वय

संत श्री आसारामजी गुरुकुल
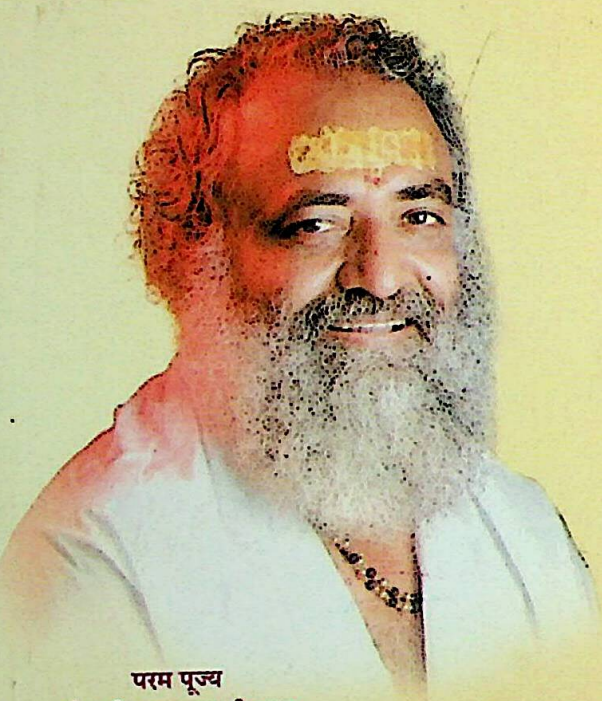
परम पूज्य
संत श्री आसारामजी बापू

विद्यार्थी दैनंदिनी

नाम :

वर्ष :

विद्यार्थी दैनंदिनी

संत श्री आसारामजी गुरुकुल, काशी
वाराणसी (उ.प्र.)

दूरभाष : (0542) 2213781, 3209666.

नाम : ....

कक्षा : .... सत्र : ....

अनुक्रमांक : .... प्रवेश क्र. : ....

संपर्क क्र. : ....

परम पूज्य संत श्री आसारामजी बापू का संदेश

हे भारत के विद्यार्थी !

यदि तुम्हें जीवन के हर क्षेत्र में सफल होना है, महान बनना है तो यह आत्मविश्वास जगा लो कि कोई भी वस्तु या व्यक्ति मेरे मार्ग में विघ्न नहीं डाल सकता है, क्योंकि प्रभु की अनंत-अनंत शक्तियाँ मेरे भीतर छिपी हुई है। मेरे दिव्य जीवन जीने के संकल्पों को प्रभु की ओर से सहायता मिल रही है।

सदैव याद रखो ! तुम भारत के अमृत-पुत्र हो और संसार की सबसे महान संस्कृति के उत्तराधिकारी हो। तुम्हारा जन्म संसार की परिस्थितियों के हाथों कठपुतली बनने के लिए नहीं हुआ है। प्रभु ने तुम्हें संकल्प-सामर्थ्य दिया है। अपने संकल्पों को दिव्य बनाओ। जीवन में संयम, सदाचार और आत्मविश्वास जगाकर महान बन जाओ। ॐ बल... ॐ उत्साह... ॐ साहस...

उठो ! जागो ! आलस्य को भगाओ। योगासन, आहारशुद्धि के नियम आदि के माध्यम से अपने जीवन को गुलाब की नाईं महकाओ। अगर तुमने इन बातों को अपना लिया तो फिर तुम जो चाहो कर सकते हो।

वह कौन-सा उकदा है जो हो नहीं सकता।

तेरा जी न चाहे तो हो नहीं सकता ॥

शक्ति और सत्प्रेरणा के भंडार अपने आत्मा-परमात्मा में, हृदयेश्वर में ध्यानस्थ होकर अपने तथा समाज के उद्धार की कल्याणकारी कुंजियाँ प्राप्त करते रहो।

शाबाश वीर ! शाबाश !! ईश्वर और संतों के आशीर्वाद

सदा तुम्हारे साथ हैं !

विद्यार्थी की आचार-संहिता

१. मैं गुरुकुल में नियत समय पर उपस्थित रहूँगा।

२. गुरुकुल में हमेशा गणवेश में आऊँगा।

३. मैं एकाग्र चित्त से प्रार्थना करूँगा। अपने तन, मन और कपड़े सदा स्वच्छ व पवित्र रखूँगा।

४. मैं गुरुकुल में आवश्यक सभी विषयों की पुस्तकें समय-पत्रक के अनुसार नियमित रूप से लाऊँगा।

५. मैं गृहकार्य नियमित रूप से करूँगा।

६. मैं गुरुकुल में प्रत्येक कालखण्ड (पीरियड) में जो पढूँगा, उसका घर जाकर या छात्रावास में चिंतन करूँगा।

७. किसीकी खोयी हुई चीज-वस्तु मुझे मिलेगी तो मैं उसे कार्यालय में जमा कराऊँगा।

८. मैं हमेशा कूड़ा कूड़ेदान में ही डालूँगा।

९. अपनी कक्षा तथा गुरुकुल को स्वच्छ रखूँगा।

१०. गुरुकुल में अनुशासन-भंग हो ऐसा व्यवहार मुझसे न हो, इस बात का ख्याल रखूँगा।

११. मैं अपने सर्वांगीण विकास के लिए पुस्तकालय का उपयोग करूँगा तथा शिक्षा के अतिरिक्त अन्य सत्प्रवृत्तियों में भी भाग लूँगा।

१२. 'गुरुकुल मेरा है और मैं गुरुकुल का हूँ।' यह ध्येय-वाक्य मैं सदा याद रखूँगा।

प्रतिज्ञा

'भारत' मेरा देश है। सभी भारतवासी मेरे भाई-बहन हैं।

मैं अपने देश से प्यार करता हूँ

और उसकी समृद्ध व वैविध्यपूर्ण परंपरा का मुझे गर्व है।

मैं सदा उसके लायक बनने का प्रयत्न करूँगा।

मैं अपने माता-पिता, शिक्षकों एवं बुजुर्गों का आदर करूँगा

और सभीके साथ सभ्यतापूर्ण व्यवहार करूँगा।

मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि अपने देश और

देशबंधुओं के प्रति एकनिष्ठ रहूँगा।

उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है।

प्रार्थना

हे भगवान !

सबको सद्‌बुद्धि दो...

शक्ति दो...

आरोग्य दो...

हम सब

अपना-अपना कर्तव्य पालें और

सुखी रहें।

आध्यात्मिकता व संस्कार-सिंचन कार्यक्रम

॥ सा विद्या या विमुक्तये ॥

मातृदेवो भव । पितृदेवो भव । आचार्यदेवो भव । अतिथिदेवो भव ।

* विद्यार्थी नित्य घर पर माता-पिता के चरण-स्पर्श व प्रणाम करके ही गुरुकुल पहुँचें । विद्यार्थी गुरुकुल पहुँचने पर सभी आचार्यों को प्रणाम व हरि ॐ कहकर अभिवादन करें ।

* प्रतिदिन आध्यात्मिक ग्रंथों तथा महापुरुषों के सदुपदेशों पर आधारित सत्साहित्य से कुछ पठन-श्रवण किया जायेगा ।

* विद्यार्थियों को ऐसी कहानियाँ पढ़ाई जायेंगी जो दैनिक जीवन में सद्गुणों का विकास करनेवाली तथा प्रेरणादायक हों । संतों, ज्ञानी-महापुरुषों, देशभक्तों आदि के जीवन-प्रसंग भी विद्यार्थियों को पढ़ाये जायेंगे । साथ-ही-साथ उन्हें भारतीय वैदिक संस्कृति का ज्ञान भी दिया जायेगा । इस हेतु गुरुकुल में अनिवार्य रूप से संस्कार/नैतिक शिक्षा के पीरियड रखे जायेंगे ।

* आध्यात्मिक ज्ञान परीक्षा, भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा, 'दिव्य प्रेरणा प्रकाश' ज्ञान प्रतियोगिता आदि स्पर्धाएँ भी रखी जायेंगी ।

* सभी विद्यार्थी एवं आचार्यगण घर से ललाट पर कुमकुम/सिंदूर/ तुलसी या पीपल के जड़ की मिट्टी अथवा चंदन का तिलक लगाकर ही आयें । जिन्होंने तिलक न लगाया हो, वे प्रार्थना के पहले तिलक लगा लें ।

* दैनिक शिक्षा का आरम्भ तथा समाप्ति सामूहिक प्रार्थना, ध्यान तथा मंत्रोच्चारण से होगी, जिसकी रूपरेखा इस प्रकार है :-

(क) विद्यालय की प्रातःकालीन दैनिक प्रार्थना

(१) हरि ॐ का १५-२० बार दीर्घ उच्चारण ।

(२) मंत्रोच्चारण : ॐ गं गणपतये नमः.....ॐ श्री सरस्वत्यै नमः..... ॐ श्री गुरुभ्यो नमः

(३) गुरुवंदना - गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः.....

(४) प्रार्थना - हे प्रभु आनंददाता.....

(५) पाँच भ्रामरी प्राणायाम ।

(६) टंक विद्या प्रयोग ।

(७) श्रीमद्भगवद्गीता के दो श्लोक अर्थ सहित पठन-श्रवण ।

(८) जीभ को तालू में लगाकर ज्ञानमुद्रा में आज्ञाचक्र में ध्यान (लगभग १ मिनट तक) ।

(९) ऋषि प्रसाद अथवा लोक कल्याण सेतु से एक-दो पृष्ठों का पठन-श्रवण ।

(१०) विद्यालय संबंधी सूचनाएँ इत्यादि ।

(११) शांति पाठ - ॐ सहनाववतु... । पूर्णाहुति - ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं .....

घर से आनेवाले सभी विद्यार्थियों को प्रार्थना के बाद तुलसी के ५-७ पत्ते खाने के लिए दिये जायेंगे ।

(सावधानी : तुलसी पत्ते खाने के बाद थोड़ा पानी अवश्य पीना चाहिए । रविवार को तुलसी का सेवन वर्जित है । दुग्धपान और तुलसी-सेवन के बीच दो घंटे का अंतर अवश्य रखें ।)

(ख) प्रत्येक पीरियड के प्रारम्भ का नियम

(१) ॐ कार का दीर्घ (लंबा) उच्चारण

(२) अनामिका उँगली से आज्ञा-चक्र पर रगड़ मारते हुए निम्न मंत्रों का एक-एक बार उच्चारण करें : ॐ गं गणपतये नमः....ॐ श्री सरस्वत्यै नमः ...ॐ श्री गुरुभ्यो नमः ....

(३) जीभ तालू में तथा मूलबंध लगाकर श्वासोच्छ्वास की २०-२५ बार गिनती करें।

(४) 'मैं अजर, अमर शुद्ध चैतन्य आत्मा हूँ।' - ऐसी भावना करें और थोड़ा शांत बैठें।

उपरोक्त नियमों का पालन प्रत्येक शिक्षक द्वारा अपने हर पीरियड के प्रारम्भ में कराया जाय। इसके बाद ही पढ़ाई प्रारम्भ हो।

(ग) मध्याह्न संध्या (दोपहर ११:५० से १२:१० बजे तक)

(१) ५ मिनट तक पूज्य बापूजी/स्वामी श्री लीलाशाहजी बापूजी के स्वरूप या स्वस्तिक अथवा ॐकार को एकटक देखते हुए ॐकार का गुंजन करें।

(२) जीभ को तालू में तथा मूलबंध लगाकर श्वासोच्छ्वास की २५-५० बार गिनती करें।

(३) मानसिक मंत्रजप (५ मिनट)

(४) संकीर्तन (२ मिनट) तथा हास्य-प्रयोग

(५) शास्त्रवचनों का श्रवण (गुरुभक्तियोग या जीवन-रसायन)

(घ) विद्यालय समापन से पूर्व की सामूहिक प्रार्थना

(१) सात बार हरि ॐ का गुंजन

(२) **उद्यमः साहसं धैर्यं बुद्धिः शक्तिः पराक्रमः ।**

षडेते यत्र वर्तन्ते तत्र देवः सहायकृत ॥

अर्थ : उद्यम, साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्ति और पराक्रम – ये छः गुण हम अपने जीवन में विकसित करने का संकल्प करते हैं । वह अंतर्यामी परमात्मा न दूर है, न दुर्लभ है । वह परमात्मा पग-पग पर हमारी सहायता करे ।

(३) हाथ जोड़कर अच्छे कार्यों के लिए प्रभु को धन्यवाद दें तथा जो कुछ गलत हुआ हो उसके लिए क्षमा-याचना एवं दुबारा गलती न करने का दृढ़ संकल्प करें । प्राणिमात्र में एक ईश्वर को देखने का दृढ़ संकल्प करें ।

(४) जीभ तालू में तथा मूलबंध लगाकर श्वासोच्छ्वास की गिनती (११ बार) ।

(५) एक बार गायत्री मंत्र का जप ।

(६) एक बार महामृत्युंजय मंत्र का जप ।

(७) पूर्णाहुति : ॐ पूर्णमदः...., तं नमामि हरिं परं ....

(ङ) विद्यालय में सप्ताह में एक दिन संस्कार-सिंचन कार्यक्रम

(१) पूज्य बापूजी का वीडियो सत्संग एवं सत्संग के विषय पर बच्चों से प्रश्नोत्तरी का आयोजन।

(२) प्रेरणाप्रद प्रसंग एवं ज्ञानवर्धक चुटकुलों का समन्वय।

(३) एकाग्रता, निर्णयशक्ति व संगठनशक्ति बढ़ाने हेतु खेल।

(४) योगासन एवं प्राणायाम का प्रशिक्षण।

(५) श्री आसारामायण का पाठ।

(६) कक्षा-८ से ऊपर के विद्यार्थियों को 'दिव्य प्रेरणा प्रकाश' पुस्तक का अध्ययन तथा उस पर प्रश्नोत्तरी।

श्री गुरुवंदना स्तोत्र

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।

गुरुर्साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः पूजामूलं गुरोः पदम् ।

मंत्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोः कृपा ॥

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।

तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव ।

त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं ।

द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम् ॥

एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतं ।

भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि ॥

वंदना

वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शंकररूपिणम् ।

यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते ॥

'जिनके आश्रित होने से वक्रयुक्त चंद्रमा भी सर्वत्र वंदनीय हुआ है, उन ज्ञानमय, नित्य, शंकररूपी गुरु की मैं वंदना करता हूँ।'

*

श्रीगुरु-महिमा

नमामि सद्गुरुं शांतं प्रत्यक्षं शिवरूपिणम् ।
शिरसा योगपीठस्थं मुक्तिकामार्थसिद्धिदम् ॥

'शांत, प्रत्यक्ष, काम, अर्थ, मोक्ष और सिद्धि देनेवाले, शिवस्वरूप योगपीठ पर विराजमान श्रीसद्गुरुदेव को मैं नमस्कार करता हूँ ।'

श्री गणेशजी की स्तुति

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटिसमप्रभः ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥

'कोटि सूर्य समान महातेजस्वी, विशालकाय और वक्र सूँड़वाले हे गणपतिदेव ! आप सदा सर्वकार्यों में मेरे विघ्नों का निवारण करें ।'

विद्यादेवी की आराधना

या देवी सर्वभूतेषु विद्यारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥
या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥
या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥

'जो देवी समस्त प्राणियों में विद्यारूप में स्थित हैं, उनको नमस्कार है, नमस्कार है, बारंबार नमस्कार है । जो देवी समस्त प्राणियों में बुद्धिरूप में स्थित हैं, उनको नमस्कार है, नमस्कार है, बारंबार नमस्कार है । जो देवी समस्त प्राणियों में श्रद्धारूप में स्थित हैं, उनको नमस्कार है, नमस्कार है, बारंबार नमस्कार है ।'

श्री सरस्वती माता की वंदना

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना ।
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ॥

'जो कुंदन के फूल, चंद्रमा एवं ओसबिंदु के हार समान श्वेतवर्ण हैं, जो श्वेत वस्त्र पहनती हैं, जिनके हाथ में उत्तम वीणा सुशोभित है, जो श्वेत कमल के आसन पर विराजमान हैं, ब्रह्मा-विष्णु-महेश आदि देव जिनकी नित्य स्तुति करते हैं और जो सभी प्रकार की जड़ता का हरण कर लेती हैं ऐसी भगवती सरस्वती माता मेरा पालन करें ।'

शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम् ।
हस्ते स्फाटिकमालिकां च दधतीं पद्मासने संस्थितां
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवती बुद्धिप्रदां शारदाम् ॥

'जिनका स्वरूप श्वेत है, जो ब्रह्म-विचार परम तत्त्वरूप हैं (जो समग्र संसार में व्याप्त हैं), जो अपने हाथों में वीणा और पुस्तक धारण करती हैं, अभय प्रदान करती हैं, अज्ञानतारूपी अंधकार को दूर करती हैं, हाथ में स्फटिक मणि की माला रखती हैं, कमल के आसन पर विराजमान हैं और बुद्धि प्रदान करनेवाली हैं, ऐसी माता आद्य परमेश्वरी भगवती सरस्वती को मैं वंदन करता हूँ ।'

श्री हनुमानजी की वंदना

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥

'मन जैसी गतिवाले, पवन के समान वेगवाले, जितेन्द्रिय, बुद्धिमानों में श्रेष्ठ, वायुपुत्र, वानर-समूह के अग्रणी सेवक श्रीरामचंद्रजी के दूत को मैं प्रणाम करता हूँ।'

महामृत्युंजय मंत्र

ॐ हौं जूँ सः । ॐ भूर्भुवः स्वः ।
ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।
ॐ स्वः भुवः भूः ॐ । सः जूँ हौं ॐ ।

भावार्थ : हम तीन नेत्रोंवाले (परमकृपालु) भगवान शंकर का यजन, ध्यान, पूजन करते हैं। जिस प्रकार उर्वारुक (ककड़ी) पक जाने पर बेल से स्वतः मुक्त हो जाती है, उसे बन्धन से छूटने में किसी प्रकार का कष्ट नहीं होता। उसी प्रकार हम भी संसाररूपी बेल (जिसमें दुःख-सुख रूपी फल लगते हैं, उस बेल से) से (छूटने के लिए) कृपाअमृत के द्वारा मृत्यु की अपेक्षा मोक्ष प्राप्त करें। (समस्त दुःखों, कष्टों से छुटकारा पायें।)

सूर्यनमस्कार मंत्र

(१) ॐ मित्राय नमः । (२) ॐ रवये नमः । (३) ॐ सूर्याय नमः । (४) ॐ भानवे नमः । (५) ॐ खगाय नमः । (६) ॐ पूष्णे नमः । (७) ॐ हिरण्यगर्भाय नमः । (८) ॐ मरीचये नमः । (९) ॐ आदित्याय नमः। (१०) ॐ सवित्रे नमः । (११) ॐ अर्काय नमः । (१२) ॐ भास्कराय नमः । (१३) ॐ श्रीसवितृ-सूर्यनारायणाय नमः।

सूर्य-गायत्री मंत्र

ॐ आदित्याय विद्महे, भास्कराय धीमहि ।

तन्नो भानुः प्रचोदयात् ॥१॥

ॐ आदित्याय विद्महे, मार्तंडाय धीमहि ।

तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् ॥२॥

ॐ आदित्याय विद्महे, सहस्रकिरणाय धीमहि ।

तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् ॥३॥

करदर्शन

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती ।

करमूले तु गोविन्दः प्रभाते करदर्शनम् ॥

'हाथ के अग्र भाग में लक्ष्मी का निवास है, मध्य भाग में विद्यादात्री सरस्वती का निवास है और मूल भाग में भगवान गोविन्द का निवास है । अतः प्रभात में करदर्शन करना चाहिए ।'

भूमि-वंदन

समुद्रवसने देवि पर्वतस्तनमण्डिते ।

विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ॥

'समुद्ररूपी वस्त्रों को धारण करनेवाली, पर्वतरूपी स्तनों से मंडित भगवान विष्णु की पत्नी हे पृथ्वी देवी ! आप मुझे मेरे पाद-स्पर्श के लिए क्षमा करें ।'

भोजन के पहले के मंत्र

ॐ सह नाववतु । सह नौ भुनक्तु । सह वीर्यं करवावहै ।
तेजस्विनावधीतमस्तु । मा विद्विषावहै ।
ॐ शांतिः ! शांतिः !! शांतिः !!!

'हम दोनों (गुरु और शिष्य) साथ रहें, साथ उपभोग करें, एक साथ पुरुषार्थ करें। हमारी बुद्धि तेजस्वी बने, हम परस्पर द्वेष न करें।'

हरिर्दाता हरिर्भोक्ता हरिरन्नं प्रजापतिः ।
हरिः सर्वशरीरस्थो भुंक्ते भोजयते हरिः ॥

'अन्न परोसनेवाला, भोजन करनेवाला और अन्न-पदार्थ आदि सभी प्रजा का पालन करनेवाले परमेश्वर के ही रूप हैं। सभी शरीरों में परमेश्वर का वास है, भोजन करनेवाले व करवानेवाले परमेश्वरस्वरूप ही हैं।'

(विष्णु पुराण)

ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम् ।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना ॥

'यज्ञ की होम-सामग्री ब्रह्म है। ब्रह्मरूपी अग्नि में ब्रह्मरूपी होमकर्ता ब्रह्म को ही अर्पण करता है। इस ब्रह्मकर्म से ब्रह्म की प्राप्ति होती है।'

अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः ।
प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम् ॥

'मैं जठराग्नि होकर प्राणियों के शरीर में प्राण तथा अपानवायु से युक्त होकर चार प्रकार का अन्न पचाता हूँ।'

ॐ प्राणाय स्वाहा । ॐ अपानाय स्वाहा ।
ॐ उदानाय स्वाहा । ॐ व्यानाय स्वाहा । ॐ समानाय स्वाहा ।

उपरोक्त मंत्र द्वारा प्राणवायु की पाँच आहुतियाँ देकर जो मौनपूर्वक भोजन करता है उसके पाँचों पातक नष्ट हो जाते हैं।

(पद्म पुराण)

रात्रि-शयन मंत्र

'हरि ॐ' का कम-से-कम ११ बार गुंजन करें।
(११ से अधिक भी कर सकते हैं।)
ॐ अर्यमायै नमः। मंत्र का ११ बार जप करें।
ॐ नमो नन्दीश्वराय। मंत्र का ११ बार जप करें।

शांति पाठ

ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु।
सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्वि नावधीतमस्तु। मा विद्विषावहै।
ॐ शांतिः ! शांतिः !! शांतिः !!!
ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥

ॐ शांतिः ! शांतिः !! शांतिः !!!

राष्ट्रगीत

वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।
सुजलाम्, सुफलाम् मलयज शीतलाम्।
शश्य श्यामलाम् मातरम्।
वंदे...... ॥
शुभ्रज्योत्स्ना पुलकित यामिनीम्।
फुल्ल कुसुमित द्रुमदल शोभिनीम्॥
सुहासिनीम् सुमधुर भाषिणीम्।
सुखदाम् वरदाम् मातरम्।
वंदे...... ॥

(कवि : श्री बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय)

राष्ट्रगान

जन गण मन अधिनायक जय हे, भारत भाग्य विधाता,

पंजाब सिंध गुजरात मराठा, द्राविड उत्कल बंगा,

विन्ध्य हिमाचल यमुना गंगा उच्छल जलधि तरंगा,

तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिष माँगे,

गाये तव जय गाथा ।

जन गण मंगलदायक जय हे ! भारत भाग्य विधाता,

जय हे, जय हे, जय हे,

जय जय जय जय हे !

(कवि : श्री रविन्द्रनाथ टैगोर)

*

राष्ट्रध्वज गीत

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झंडा ऊँचा रहे हमारा,

सदा शक्ति बरसानेवाला, प्रेम सुधा सरसानेवाला,

वीरों को हरषानेवाला, मातृभूमि का तन-मन सारा...
झंडा ऊँचा रहे...

इसकी शान न जाने पाये, चाहे जान भले ही जाये,

विश्व विजय करके दिखलायें, तब होवे प्रण पूर्ण हमारा ।

झंडा ऊँचा रहे...

(कवि : श्री श्यामलाल गुप्ता 'पार्षद')

प्रार्थना-गीत

(१) गुरु की सेवा साधु जाने...

गुरु की सेवा साधु जाने,

गुरु सेवा कहाँ मूढ पिछानै।

गुरु सेवा सबहुन पर भारी,

समझ करो सोई नरनारी ॥

गुरु सेवा सों विघ्न विनाशे,

दुर्मति भाजै पातक नाशै।

गुरु सेवा चौरासी छूटै,

आवागमन का डोरा टूटै ॥

गुरु सेवा यम दंड न लागै,

ममता मरै भक्ति में जागे।

गुरु सेवा सूं प्रेम प्रकाशे,

उनमत होय मिटै जग आशै ॥

गुरु सेवा परमातम दरशै,

त्रैगुण तजि चौथा पद परशै।

श्री शुकदेव बतायो भेदा,

चरनदास कर गुरु की सेवा ॥

(२) हे प्रभु ! आनंददाता !!...

हे प्रभु ! आनंददाता !! ज्ञान हमको दीजिये ।
शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हमसे कीजिये ॥
हे प्रभु०

लीजिये हमको शरण में हम सदाचारी बनें ।
ब्रह्मचारी धर्मरक्षक वीर व्रतधारी बनें ॥
हे प्रभु०

निंदा किसीकी हम किसीसे भूलकर भी ना करें ।
ईर्ष्या कभी भी हम किसीसे भूलकर भी ना करें ॥
हे प्रभु०

सत्य बोलें झूठ त्यागें मेल आपस में करें ।
दिव्य जीवन हो हमारा यश तेरा गाया करें ॥
हे प्रभु०

जाय हमारी आयु हे प्रभु ! लोक के उपकार में ।
हाथ डालें हम कभी न भूलकर अपकार में ॥
हे प्रभु०

कीजिये हम पर कृपा ऐसी हे परमात्मा !
मोह मद मत्सर रहित होवे हमारी आत्मा ॥
हे प्रभु०

प्रेम से हम गुरुजनों की नित्य ही सेवा करें ।
प्रेम से हम संस्कृति की नित्य ही सेवा करें ॥
हे प्रभु०

योगविद्या ब्रह्मविद्या हो अधिक प्यारी हमें ।
ब्रह्मनिष्ठा प्राप्त करके सर्वहितकारी बनें ॥
हे प्रभु०

(३) परम ज्योति जगा देना...

प्रभु ! मेरे उर अंतर में,

परम ज्योति जगा देना।

जले नित ज्ञान का दीपक, अहं तम भय मिटा देना ॥

मन-मंदिर की मूरत में, करूँ दीदार मैं तेरा।

परम पावन रहे जीवन, मेरे अवगुण भुला देना ॥

निहारूँ नूरे नज़रों में, छवि तेरी ही प्यारी को।

सदा एहसास हो तेरा, चित्त-चमन खिला देना ॥

संचित हो दिल के दामन में, सुमन श्रद्धा और भक्ति के।

हो जगमग ज्ञान की बाती, यह उर-आँगन महका देना ॥

रहे हरदम चिंतन-मनन तेरा, प्रभु ! तेरी ही महिमा का।

रँग दो अपने ही रंग में, 'साक्षी' अपना बना देना ॥

बसी है तन-सितारों में, तेरी झंकार मेरे दाता।

स्वर सोऽहं-शिवोऽहं में,

सदा मुझको डुबा देना ॥

रहे आशिक सदा मनवा, तेरी हस्ती और मस्ती का।

मधुर निज नाम का प्याला,

प्रभु भर-भर पिला देना ॥

(४) जोड़ के हाथ झुका के मस्तक...

जोड़ के हाथ झुका के मस्तक, माँगे यह वरदान गुरु !

द्वेष मिटायें, प्रेम बढ़ायें, नेक बनें इनसान प्रभु !

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥

भेदभाव सब मिटे हमारा, सबको मन से प्यार करें ।

जाये नजर जिस ओर हमारी, तेरा ही दीदार करें ॥

पल-पल, क्षण-क्षण करें हमेशा, तेरा ही गुणगान प्रभु !

जोड़ के हाथ...

दीन, दुःखी और रोगी सबके, दुखड़े निशदिन दूर करें ।

पोंछ के आँसू रोते नैना, हँसने पर मजबूर करें ॥

गुरुचरणों की सेवा करते, निकले तन से प्राण प्रभु ! जोड़ के हाथ...

गुरुज्ञान से इस दुनिया का, दूर अँधेरा कर दें हम ।

सत्य प्रेम के मीठे रस से, सबका जीवन भर दें हम ॥

वीर धीर बन जीना सीखें, ये तेरी संतान गुरु !

द्वेष मिटायें प्रेम बढ़ायें, नेक बनें इनसान प्रभु ! जोड़ के हाथ...

(५) हे शारदे माँ !

हे शारदे माँ, हे शारदे माँ, अज्ञानता से हमें तार दे माँ !
हे शारदे माँ, हे शारदे माँ, अज्ञानता से हमें तार दे माँ !
तू स्वर की देवी है, संगीत तुझसे, हर शब्द तेरा है, हर गीत तुझसे।
हम हैं अकेले, हम हैं अधूरे, तेरी शरण में, हमें प्यार दे माँ !
हे शारदे माँ, हे शारदे माँ, अज्ञानता से हमें तार दे माँ !
ऋषियों ने समझी, मुनियों ने जानी, वेदों की भाषा, पुराणों की वाणी।
हम भी तो समझें, हम भी तो जानें, विद्या का हमको अधिकार दे माँ !
हे शारदे माँ, हे शारदे माँ, अज्ञानता से हमें तार दे माँ !

भजन

(१) गुरुभक्ति भजन

आज तो गुरुवार है, सद्गुरुजी का वार है।
गुरुभक्ति का पी लो प्याला, होता बेड़ा पार है॥१॥
गुरुचरणों का ध्यान लगाओ, निर्मल मन हो जायेगा।
तन मन धन गुरु-चरण चढ़ाकर, विनती बारंबार है॥२॥
प्रभु को भूल गये ओ प्यारे ! माया में लिपटाये हो।
पूर्व पुण्य से नर तन पाया, मिले न बारंबार है॥३॥
गुरुभक्ति से प्रभु मिलेंगे, बिन गुरु गोता खायेगा।
भवसागर में डूबी नैया, सद्गुरु तारणहार है॥४॥
गुरु आसारामजी ज्ञान के दाता, भक्तों का कल्याण करो।
निर्मोही बलिहार है, अर्जी बारंबार है॥५॥

(२) वैष्णव-जन तो...

वैष्णवजन तो तेने रे कहिए, जे पीर परायी जाणे रे,

परदुःखे उपकार करे ने, मन अभिमान न आणे रे।

वैष्णवजन तो तेने रे कहिए०

सकल लोकमां सहुने वंदे, निंदा न करे कोनी रे,

वाच-काछ-मन निश्चल राखे, धन धन जननी तेनी रे।

वैष्णवजन तो तेने रे कहिए०

समद्रष्टि ने तृष्णा त्यागी, परस्त्री जेने मात रे,

जिह्वा थकी असत्य नही बोले, परद्रव्य न झाले हाथ रे।

वैष्णवजन तो तेने रे कहिए०

मोह-माया लेपे न तेने, द्रढ वैराग्य तेना मनमां रे,

रामनाम-शुं ताणी लागी, सकल तीरथ तेना तनमां रे।

वैष्णवजन तो तेने रे कहिए०

वणलोभी ने कपटरहित छे, काम-क्रोध जेणे मार्या रे,

भणे नरसैंयो : तेनुं दर्शन करता कुल एकोतर तार्यां रे।

वैष्णवजन तो तेने रे कहिए०

– नरसिंह महेता

(३) भए प्रगट कृपाला...

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप बिचारी॥

लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुज चारी।
भूषन बनमाला नयन बिसाला सोभासिंधु खरारी॥

कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि बिधि करौं अनंता।
माया गुन ग्यानातीत अमाना बेद पुरान भनंता॥

करुना सुख सागर सब गुन आगर जेहि गावहिं श्रुति संता।
सो मम हित लागी जन अनुरागी भयउ प्रगट श्रीकंता॥

ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति बेद कहै।
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै॥

उपजा जब ग्याना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै॥

माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा।
कीजै सिसुलीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनूपा॥

सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा।
यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भवकूपा॥

गीत

(१) कदम अपने आगे बढ़ाता चला जा...

कदम अपने आगे बढ़ाता चला जा ।
सदा प्रेम के गीत गाता चला जा ॥
तेरे मार्ग में वीर ! काँटे बड़े हैं ।
लिये तीर हाथों में वैरी खड़े हैं।
बहादुर सबको मिटाता चला जा ।
कदम अपने आगे बढ़ाता चला जा ॥
तू है आर्यवंशी ऋषिकुल का बालक ।
प्रतापी यशस्वी सदा दीनपालक ।
तू संदेश सुख का सुनाता चला जा ।
कदम अपने आगे बढ़ाता चला जा ॥
भले आज तूफान उठकर के आयें ।
बला पर चली आ रही हों बलाएँ ।
युवा वीर है दनदनाता चला जा ।
कदम अपने आगे बढ़ाता चला जा ॥
जो बिछुड़े हुए हैं उन्हें तू मिला जा ।
जो सोये पड़े हैं उन्हें तू जगा जा ।
तू आनंद डंका बजाता चला जा ।
कदम अपने आगे बढ़ाता चला जा ॥

(२) 'जिस देश में...'

जिस देश में संत फकीरों का होता सम्मान हो।
जहाँ माता पिता और गुरुओं की सेवा करता इनसान हो।
वो देश हमारा भारत है, उस देश की धरती को नमन॥

ये भूमि है श्री रामकृष्ण, गुरुनानक, तुलसी, कबीर की।
श्री रामतीर्थ, विवेकानंद, मीरा और रहीम की।
जहाँ दशरथ और जनक राजा का गुरुचरणों में ध्यान हो॥ वो देश०

जहाँ वीर शिवाजी, गाँधी, नेहरू, शास्त्री जैसे लाल हुए।
उनकी सच्चाई और साहस के करतब बेमिसाल हुए।
जहाँ शांति, अहिंसा, प्रेम, प्यार और ब्रह्मज्ञान की खान हो॥ वो देश०

जहाँ पूजा होती कन्या की, रक्षा बहनों की करते।
इज्जत, इमां, फर्ज की खातिर, मौत से कभी नहीं डरते।
जहाँ नारी को देवी कहते और कण कण में भगवान हो॥ वो देश०

विश्व शांति का ढोल बिगुल, हर देश बजाया करता है।
लेकिन बारूदों के दम से, सबको डराया करता है।
पर संत सँभाले डोर देश की, जीवन जहाँ आसान हो॥ वो देश०

(३) 'सारे जहाँ से अच्छा...'

सारे जहाँ से अच्छा, हिन्दोस्तां हमारा

हम बुलबुले हैं इसकी; वह गुलसितां हमारा।

सारे जहाँ...

गुरबत में हो अगर हम, रहता है दिल वतन में

समझो वहीं हमें भी, दिल हो जहाँ हमारा।

परबत वह सब से ऊँचा, हम साया आसमां का

वह संतरी हमारा, वह पासबां हमारा।

गोदी में खेलती हैं, जिसकी हजारों नदियाँ

गुलशन है जिनके दम से, रश्के-जिनां हमारा।

मजहब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना

हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दोस्तां हमारा।

यूनान-ओ मिस्त्र-ओ रोमा, सब मिट गये जहाँ से

अब तक मगर है बाकी, नामोनिशां हमारा।

कुछ बात है कि हस्ती, मिटती नहीं हमारी

सदियों रहा है दुश्मन, दौरे जमां हमारा।

इकबाल कोई महरम, अपना नहीं जहाँ में

मालूम क्या किसीको, दर्द-ए-निहा हमारा।

(४) हम भारत देश के वासी हैं

हम भारत देश के वासी हैं। हम ऋषियों की संतानें हैं।

हम जगद्गुरु के बालक हैं। हम परम गुरु के बच्चे हैं॥

हम भारत देश के...

हम देवभूमि के वासी हैं। हम सोऽहम् नाद जगायेंगे।

हम शिवोऽहम् शिवोऽहम् गायेंगे। हम नयी चेतना लायेंगे॥

हम भारत देश के...

हम संयमी जीवन जीयेंगे। हम भारत महान बनायेंगे।

हम प्रभु के गीत गायेंगे। हम दिव्य शक्ति बढ़ायेंगे॥

हम भारत देश के...

हम भारत भर में घूमेंगे। हम गुरु-संदेश सुनायेंगे।

हम आत्म-जागृति पायेंगे। हम नयी रोशनी लायेंगे॥

हम भारत देश के...

हम गुरु का ज्ञान पचायेंगे। हम बड़भागी हो जायेंगे।

हम जीवन्मुक्ति पायेंगे। हम गुरु की शान बढ़ायेंगे॥

हम भारत देश के...

श्रीमद्भगवद्गीता के प्रेरणादायक श्लोक

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।
न चैनं क्लेदन्यत्यापो न शोषयति मारुतः ॥

इस आत्मा को शस्त्र काट नहीं सकते, इसको आग जला नहीं सकती, इसको जल गला नहीं सकता और वायु सुखा नहीं सकती। (२.२३)

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि ॥

तेरा कर्म करने में ही अधिकार है, उनके फलों में कभी नहीं । इसलिए तू कर्मों के फल का हेतु मत हो तथा तेरी कर्म न करने में भी आसक्ति न हो । (२.४७)

श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः ।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति ॥

जितेन्द्रिय, साधनपरायण और श्रद्धावान मनुष्य ज्ञान को प्राप्त होता है तथा ज्ञान को प्राप्त होकर वह बिना विलम्ब के, तत्काल ही भगवत्प्राप्तिरूप परम शान्ति को प्राप्त हो जाता है । (४.३९)

असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम् ।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते ॥

श्रीभगवान बोले : हे महाबाहो ! निःसन्देह मन चंचल और कठिनता से वश में होनेवाला है परन्तु हे कुन्तीपुत्र अर्जुन ! यह अभ्यास और वैराग्य से वश में होता है । (६.३५)

रसोऽहमप्सु कौन्तेय प्रभास्मि शशिसूर्ययोः ।
प्रणवः सर्ववेदेषु शब्दः खे पौरुषं नृषु ॥

हे अर्जुन ! मैं जल में रस हूँ, चन्द्रमा और सूर्य में प्रकाश हूँ, सम्पूर्ण वेदों में ओंकार हूँ, आकाश में शब्द और पुरुषों में पुरुषत्व हूँ । (७.८)

अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः ।
अहमादिश्च मध्यं च भूतानामन्त एव च ॥

हे अर्जुन ! मैं सब भूतों के हृदय में स्थित सबका आत्मा हूँ तथा सम्पूर्ण भूतों का आदि, मध्य और अन्त भी मैं ही हूँ । (१०.२०)

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति ।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यंत्रारूढानि मायया ॥

हे अर्जुन ! शरीररूप यंत्र में आरूढ़ हुए सम्पूर्ण प्राणियों को अन्तर्यामी परमेश्वर अपनी माया से उनके कर्मों के अनुसार भ्रमण कराता हुआ सब प्राणियों के हृदय में स्थित है । (१८.६१)

तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत ।
तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम् ॥

हे भारत ! तू सब प्रकार से उस परमेश्वर की ही शरण में जा। उस परमात्मा की कृपा से ही तू परम शान्ति को तथा सनातन परम धाम को प्राप्त होगा । (१८.६२)

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया ।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते ॥

क्योंकि यह अलौकिक अर्थात् अति अद्‌भुत त्रिगुणमयी मेरी माया बड़ी दुस्तर है परन्तु जो पुरुष केवल मुझको ही निरन्तर भजते हैं, वे इस माया को उल्लंघन कर जाते हैं अर्थात् संसार से तर जाते हैं । (७.१४)

नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत ।
स्थितोऽस्मि गतसन्देहः करिष्ये वचनं तव ॥

अर्जुन बोले : हे अच्युत ! आपकी कृपा से मेरा मोह नष्ट हो गया और मैंने स्मृति प्राप्त कर ली है । अब मैं संशयरहित होकर स्थित हूँ, अतः आपकी आज्ञा का पालन करूँगा । (१८.७३)

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥

हे राजन् ! जहाँ योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण हैं और जहाँ गाण्डीव-धनुषधारी अर्जुन हैं, वहीं पर श्री, विजय, विभूति और अचल नीति है- ऐसा मेरा मत है । (१८.७८)

भारतीय संस्कृति के तथ्य

* **एक :** परमात्मा।
* **दो :** परमात्मा, प्रकृति।
* **दो सूत्र :** एकाग्रता और अनासक्ति।
* **दो पक्ष :** कृष्ण पक्ष, शुक्ल पक्ष।
* **तीन गुण :** सत्व, रज, तम।
* **त्रिदेव :** ब्रह्मा, विष्णु, महेश।
* **त्रिविध नरक द्वार :** काम, क्रोध, लोभ।
* **त्रिविध ज्ञान द्वार :** श्रद्धा, तत्परता, इन्द्रिय संयम।
* **चार वेद :** ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद।
* **चार आश्रम :** ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास।
* **चार पुरुषार्थ :** धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष।
* **चार वर्ण :** ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र।
* **चार युग :** सत्य, त्रेता, द्वापर, कलि।
* **चार अवस्थाएँ :** जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति और तुरीय।
* **चार महावाक्य :** अहं ब्रह्मास्मि, तत्त्वमसि, प्रज्ञानं ब्रह्म और अयमात्मा ब्रह्म।
* **साधन चतुष्टय :** नित्य-अनित्य वस्तु विवेक, वैराग्य, षट्सम्पत्ति (नीचे देखें), मुमुक्षुत्व।
* **पंच कोष :** अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, आनंदमय।
* **पंच महाभूत :** पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश।
* **पंच प्राण :** प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान।
* **पंच क्लेश :** अविद्या, अस्मिता (अभिमान), राग, द्वेष और अभिनिवेश (मृत्युभय)।
* **षड्-दर्शन :** सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, पूर्व मीमांसा, उत्तर मीमांसा (वेदान्त)।
* **षड् ऋतुएँ :** वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, शिशिर, हेमन्त।
* **षट्सम्पत्ति :** शम, दम, तितिक्षा, उपरति, श्रद्धा, समाधान।
* **सात वार :** सोम, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, रवि।

* **सप्तधान्य :** गेहूँ, जौ, चावल, चना, मूँग, उड़द और तिल।
* **सप्तर्षि :** गौतम, भरद्वाज, यमदग्नि, अत्रि, वसिष्ठ, कश्यप, विश्वामित्र।
* **सप्त चक्र :** मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत, विशुद्धाख्य, आज्ञा और सहस्रार।
* **सप्त ज्ञान भूमिका :** शुभेच्छा, विचारणा, तनुमानसा, सत्त्वापति, असंसक्ति,पदार्थाभाविनी, तुर्यगा।
* **अष्टांग योग :** यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। (**यम :** अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह। **नियम :** शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर-प्राणिधान।)
* **अष्ट सात्विक भाव :** स्तंभ, स्वेद, रोमांच, स्वरभंग, कम्प, वैवर्ण्य, अश्रु और प्रलय।
* **नवधा भक्ति :** श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य और आत्मनिवेदन।
* **दस दिशाएँ :** पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, आग्नेय, नैऋत्य, वायव्य, ईशान, ऊर्ध्व, अधः।
* **दस इन्द्रियाँ :** पाँच कर्मेन्द्रियाँ (हाथ, पैर, जिह्वा, गुदा, शिश्न), पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ (आँख, कान, नाक, जिह्वा, त्वचा)
* **दस मुख्य उपनिषद् :** ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, तैत्तिरीय, छान्दोग्य, ऐतरेय, बृहदारण्यक आदि।
* **बारह मास :** चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन।
* **द्वादश ज्योतिर्लिंग :** सोमनाथ, मल्लिकार्जुन, महाकाल, अमरेश्वर, केदार, भीमशंकर, विश्वनाथ, त्र्यम्बकेश्वर, वैद्यनाथ, नागेश्वर, रामेश्वर, घुश्मेश्वर।
* **अठारह पुराण :** मत्स्य, मार्कण्डेय, भविष्य, भागवत, ब्रह्माण्ड, ब्रह्मवैवर्त, ब्रह्म, वामन, वाराह, विष्णु, पद्म, अग्नि, शिव, लिंग, गरुड़, कूर्म, स्कन्द व नारद पुराण।

विद्यालय के सामान्य नियम

(१) विद्यालय में विद्यार्थियों को प्रतिदिन निर्धारित समय से पूर्व उपस्थित होना अनिवार्य है ।

(२) विद्यार्थियों को विद्यालय में पूर्ण गणवेश पहनकर आना अनिवार्य है । गणवेश स्वच्छ एवं व्यवस्थित होना चाहिए ।

(३) सभी विद्यार्थियों को विद्यालय की दैनिक प्रार्थना, दोपहर की संध्या एवं समापन की प्रार्थना में उपस्थित होना अनिवार्य है ।

(४) विद्यार्थियों को विद्यालय द्वारा प्राप्त गृहकार्य को सुंदर लिखावट में नियमित रूप से करना अनिवार्य है। अभिभावकों से निवेदन है कि अपने पाल्य द्वारा नियमित रूप से गृहकार्य पूरा करवायें ।

(५) कोई भी विद्यार्थी विद्यालय की संपत्ति को किसी भी प्रकार की क्षति नहीं पहुँचायेगा । ऐसा होने पर दोषी विद्यार्थी द्वारा ही उसकी क्षतिपूर्ति की जायेगी ।

(६) अभिभावकों का घर का पता व दूरभाष नं. बदलने पर विद्यालय में उसकी लिखित सूचना देना आवश्यक है ।

(७) कोई भी विद्यार्थी आचार्य की अनुमति के बिना कक्षा से बाहर नहीं जायेगा और ना ही विद्यालय में अध्ययनकाल के समय प्राचार्य की अनुमति के बिना विद्यालय परिसर से बाहर जायेगा ।

(८) अवकाश के लिए अभिभावक के हस्ताक्षर सहित लिखित प्रार्थना-पत्र विद्यार्थी द्वारा प्राचार्य को दिया जाय ।

(९) यदि विद्यार्थी बिना किसी सूचना के लगातार तीन दिन से अधिक अनुपस्थित रहता है तो उसका नाम छात्र-पंजिका से काट दिया जायेगा । ऐसी अवस्था में प्राचार्य की अनुमति प्राप्त होने एवं पुनः प्रवेश-शुल्क जमा करने पर ही विद्यार्थी को प्रवेश दिया जायेगा ।

(१०) आकस्मिक कारणों में अभिभावक की स्वयं उपस्थिति होने पर ही विद्यालय काल में विद्यार्थी को अर्द्धावकाश दिया जायेगा ।

(११) विद्यार्थी कक्षा की समय-सारणी के अनुसार ही पाठ्य पुस्तकें लेकर उपस्थित हों ।

(१२) प्रत्येक परीक्षा में विद्यार्थी का उपस्थित रहना अनिवार्य है ।

(१३) दीर्घ अवधि की छुट्टी (ग्रीष्मावकाश आदि) के बाद प्रथम दिन विद्यालय में विद्यार्थी की उपस्थिति अनिवार्य है ।

(१४) विद्यार्थी की किसी भी प्रकार की अशिष्टता एवं उसके द्वारा अनुशासनहीनता का प्रदर्शन किये जाने पर उचित कार्यवाही की जायेगी एवं उसे विद्यालय से निष्कासित भी किया जा सकता है ।

(१५) अभिभावक विद्यालय के किसी भी कार्य-दिवस में १० से १२ बजे तक प्राचार्य से मिल सकते हैं । वे कक्षा में किसी आचार्य या विद्यार्थी से बिना प्राचार्य की अनुमति के सम्पर्क नहीं कर सकते ।

(१६) विद्यालय सत्र के दौरान विद्यार्थी की कम-से-कम ८० प्रतिशत उपस्थिति होने पर ही उसे वार्षिक परीक्षा में सम्मिलित होने दिया जायेगा ।

(१७) विद्यालय का वाहन निश्चित किये गये स्थान पर ही रुकेगा । विद्यार्थी को नियत समय से पूर्व ही वहाँ उपस्थित होना चाहिए । अभिभावक वाहन के नियत स्थान व समय में परिवर्तन हेतु वाहन-चालक से कोई संवाद न करें । इस हेतु प्राचार्य से सम्पर्क करें ।

(१८) अभिभावकों को नियत समय पर निर्धारित शुल्क जमा करना अनिवार्य है । नियत समय के अंदर शुल्क जमा न करने पर

विलम्ब शुल्क भी देय होगा । एक माह तक शुल्क जमा न करने पर विद्यार्थी का नाम विद्यालय से पृथक् कर दिया जायेगा । ऐसा होने पर अभिभावक द्वारा लिखित प्रार्थना-पत्र तथा पुनःप्रवेश-शुल्क जमा करने पर ही प्रवेश प्राप्त होगा ।

(१९) विद्यालय से संबंधित किसी भी समस्या के लिए अन्य किसी कर्मचारी के स्थान पर केवल प्राचार्य से ही सम्पर्क करें ।

(२०) विद्यार्थी अपने वस्त्रों पर बटन, चैन, हुक आदि व्यवस्थित रखें । उनकी जगह बकसुआ, ऑलपिन जैसी कामचलाऊ वस्तुओं का उपयोग न करें ।

(२१) अपने नाखून ठीक-से काटकर साफ रखें ।

(२२) बालों में तेल डालकर व कंघी करके ही गुरुकुल में आयें ।

(२३) जो विद्यार्थी घर से आते हैं उन्हें पौष्टिक नाश्ता स्टील के डिब्बे में ही लेकर आना होगा । प्लास्टिक के डिब्बे में न लायें । प्लास्टिक का डिब्बा स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है ।

कक्षा-उन्नति के नियम

१. कक्षा-उन्नति संबंधी तय किये गये और शिक्षा-विभाग द्वारा मंजूर किये गये नियमों की मर्यादा में विद्यार्थी की कक्षा-उन्नति की जायेगी ।

२. वार्षिक परीक्षा में अनुपस्थित रहनेवाले विद्यार्थी की पुनः परीक्षा नहीं ली जायेगी ।

३. उत्तीर्ण होने के लिए विद्यार्थी को प्रत्येक विषय में कम-से-कम ४०% अंक प्राप्त करने होंगे ।

पुस्तकालय के नियम

१. पुस्तकालय में पूर्ण शांति बनाये रखें।

२. पुस्तक में किसी भी प्रकार कां चिह्न या चित्र बनाकर उसे हानि न पहुँचायें। पुस्तक फाड़ें नहीं। ऐसा होने पर पुस्तक की बाजार कीमत से ५०% राशि आर्थिक दंड के रूप में ली जायेगी।

३. पुस्तक कम-से-कम ७ दिन में नवीनीकरण (रिन्यू) करवानी अथवा जमा करवानी जरूरी होगी अन्यथा आर्थिक दंड भरना पड़ेगा।

अवकाश के नियम

१. प्रधानाचार्य की अनुमति से ही विद्यार्थी गुरुकुल से बाहर जा सकेंगे।

२. अवकाश के लिए पहले से निवेदन-पत्र देना अनिवार्य है।

३. अभिभावक की लिखित अनुमति से ही विद्यार्थी को किसी भी सगे-संबंधी या नौकर के साथ भेजा जायेगा।

४. दूसरे वर्ष में उत्तीर्ण होने के लिए विद्यार्थी की ८०% उपस्थिति अनिवार्य होगी।

५. संपूर्ण उपस्थिति होने पर विद्यार्थी को वर्ष के अंत में पुरस्कृत किया जायेगा।

गुरुकुल छोड़ने संबंधी नियम

१. बालक को गुरुकुल से निकालने के इच्छुक अभिभावक को एक माह पहले लिखित निवेदन देना होगा।

२. वर्ष के मध्य में गुरुकुल छोड़ने की अनुमति विशेष परिस्थिति में ही और संपूर्ण वार्षिक शुल्क जमा कराने पर ही दी जायेगी।

विद्यार्थी-उत्थान के २० अनमोल रत्न

नाम : .... रोल नं. : .... माह : ....

* क्या आप दिनचर्या का प्रतिदिन पालन करते हैं ? सच्चाई व ईमानदारी से रोज रात को सोने से पूर्व, पालन किये हुए नियमों के आगे (☐) तथा नहीं किये हुए नियमों के आगे (X) करें।

दिनचर्या	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सित.	अक्टू.	नव.	दिस.	जन.	फर.	मार्च
१. प्रातः जागरण (समय)												
२. प्रातः ध्यान, करदर्शन आदि												
३. भ्रूमध्य में तिलक												
४. माता-पिता को प्रणाम												
५. मंत्रजप												
६. ॐकार का गुंजन												
७. ध्यान												
८. योगासन												
९. बुद्धिशक्ति-मेधाशक्तिवर्धक प्रयोग												
१०. प्राणायाम												
११. सूर्य को अर्घ्यदान												
१२. सूर्यनमस्कार												
१३. तुलसीपत्र-सेवन												
१४. त्राटक												
१५. मौन (कितना समय)												
१६. सत्संग, सत्साहित्य अध्ययन												
१७. देव-मानव हास्य प्रयोग												
१८. भोजन से पूर्व ईश्वर-स्मरण												
१९. सोने से पूर्व प्रार्थना-ध्यान												
२०. रात्रिशयन (समय)												
२१. पालक के हस्ताक्षर												

२२. नोट : प्रत्येक शनिवार को दिनचर्या शिक्षिकाओं द्वारा निरीक्षण किया जायेगा।

शिक्षक की ओर से विद्यार्थी के बारे में अभिभावक को शिकायत/सूचना

क्र.	दिनांक/वार	शिकायत/सूचना	शिक्षक के हस्ता.	अभि.के हस्ता.

शिक्षक की ओर से विद्यार्थी के बारे में अभिभावक को शिकायत/सूचना

क्र.	दिनांक/वार	शिकायत/सूचना	शिक्षक के हस्ता.	अभि.के हस्ता.

शिक्षक की ओर से विद्यार्थी के बारे में अभिभावक को शिकायत/सूचना

क्र.	दिनांक/वार	शिकायत/सूचना	शिक्षक के हस्ता.	अभि.के हस्ता.

अभिभावक की ओर से विद्यार्थी के बारे में आचार्य को शिकायत/सूचना

क्र.	दिनांक/वार	शिकायत/सूचना	शिक्षक के हस्ताक्षर	अभि. के हस्ताक्षर

अभिभावक की ओर से विद्यार्थी के बारे में आचार्य को शिकायत/सूचना

क्र.	दिनांक/वार	शिकायत/सूचना	शिक्षक के हस्ताक्षर	अभि. के हस्ताक्षर

अभ्यास उपरांत की प्रवृत्तियाँ

प्रवृत्ति का नाम	तिथि	शिक्षक की टिप्पणी

गृहकार्य

विषय दिनांक दिन

शिक्षक के हस्ताक्षर

अभिभावक के हस्ताक्षर

गृहकार्य के विषय में नोट

विषय दिनांक दिन

शिक्षक के हस्ताक्षर

अभिभावक के हस्ताक्षर

गृहकार्य के विषय में नोट

गृहकार्य

विषय दिनांक दिन

शिक्षक के हस्ताक्षर

अभिभावक के हस्ताक्षर

गृहकार्य के विषय में नोट

विषय दिनांक दिन

शिक्षक के हस्ताक्षर

अभिभावक के हस्ताक्षर

गृहकार्य के विषय में नोट

गृहकार्य

विषय दिनांक दिन

शिक्षक के हस्ताक्षर

अभिभावक के हस्ताक्षर

गृहकार्य के
विषय में नोट

विषय दिनांक दिन

शिक्षक के हस्ताक्षर

अभिभावक के हस्ताक्षर

गृहकार्य के
विषय में नोट

गृहकार्य

विषय दिनांक दिन

शिक्षक के हस्ताक्षर

अभिभावक के हस्ताक्षर

गृहकार्य के विषय में नोट

विषय दिनांक दिन

शिक्षक के हस्ताक्षर

अभिभावक के हस्ताक्षर

गृहकार्य के विषय में नोट

गृहकार्य

विषय दिनांक दिन

शिक्षक के हस्ताक्षर

अभिभावक के हस्ताक्षर

गृहकार्य के
विषय में नोट

विषय दिनांक दिन

शिक्षक के हस्ताक्षर

अभिभावक के हस्ताक्षर

गृहकार्य के
विषय में नोट

गृहकार्य

विषय दिनांक दिन

शिक्षक के हस्ताक्षर

अभिभावक के हस्ताक्षर

गृहकार्य के विषय में नोट

विषय दिनांक दिन

शिक्षक के हस्ताक्षर

अभिभावक के हस्ताक्षर

गृहकार्य के विषय में नोट

गृहकार्य

विषय दिनांक दिन

शिक्षक के हस्ताक्षर

अभिभावक के हस्ताक्षर

गृहकार्य के
विषय में नोट

विषय दिनांक दिन

शिक्षक के हस्ताक्षर

अभिभावक के हस्ताक्षर

गृहकार्य के
विषय में नोट

गृहकार्य

विषय दिनांक दिन

शिक्षक के हस्ताक्षर

अभिभावक के हस्ताक्षर

गृहकार्य के विषय में नोट

विषय दिनांक दिन

शिक्षक के हस्ताक्षर

अभिभावक के हस्ताक्षर

गृहकार्य के विषय में नोट

गृहकार्य

विषय दिनांक दिन

शिक्षक के हस्ताक्षर

अभिभावक के हस्ताक्षर

गृहकार्य के विषय में नोट

विषय दिनांक दिन

शिक्षक के हस्ताक्षर

अभिभावक के हस्ताक्षर

गृहकार्य के विषय में नोट

गृहकार्य

विषय दिनांक दिन

शिक्षक के हस्ताक्षर

अभिभावक के हस्ताक्षर

गृहकार्य के विषय में नोट

विषय दिनांक दिन

शिक्षक के हस्ताक्षर

अभिभावक के हस्ताक्षर

गृहकार्य के विषय में नोट

गृहकार्य

विषय दिनांक दिन

शिक्षक के हस्ताक्षर

अभिभावक के हस्ताक्षर

गृहकार्य के विषय में नोट

विषय दिनांक दिन

शिक्षक के हस्ताक्षर

अभिभावक के हस्ताक्षर

गृहकार्य के विषय में नोट

परीक्षा-परिणाम

विद्यार्थी का नाम : ....

प्रवेश. क्रमांक .... कक्षा................ वर्ग क्रमांक ....

क्रम	विषय	प्रथम परीक्षा		द्वितीय परीक्षा	
		कुल अंक	प्राप्त अंक	कुल अंक	प्राप्त अंक
१					
२					
३					
४					
५					
६					
७					
८					
९					
१०					
११					
१२					
	कुल अंक				
	परिणाम				
	वर्ग शिक्षक के हस्ता.				
	प्राचार्य के हस्ता.				
	अभिभावक के हस्ता.				
	परिणाम घोषित दिनांक				

परीक्षा-परिणाम

विद्यार्थी का नाम : ....

प्रवेश.क्रमांक .... कक्षा................ वर्ग क्रमांक ....

क्रम	विषय	प्रथम परीक्षा		द्वितीय परीक्षा	
		कुल अंक	प्राप्त अंक	कुल अंक	प्राप्त अंक
१					
२					
३					
४					
५					
६					
७					
८					
९					
१०					
११					
१२					
	कुल अंक				
	परिणाम				
	वर्ग शिक्षक के हस्ता.				
	प्राचार्य के हस्ता.				
	अभिभावक के हस्ता.				
	परिणाम घोषित दिनांक				

परीक्षा-परिणाम

विद्यार्थी का नाम : ....

प्रवेश.क्रमांक .... कक्षा................ वर्ग क्रमांक ....

क्रम	विषय	प्रथम परीक्षा		द्वितीय परीक्षा	
		कुल अंक	प्राप्त अंक	कुल अंक	प्राप्त अंक
१					
२					
३					
४					
५					
६					
७					
८					
९					
१०					
११					
१२					
	कुल अंक				
	परिणाम				
	वर्ग शिक्षक के हस्ता.				
	प्राचार्य के हस्ता.				
	अभिभावक के हस्ता.				
	परिणाम घोषित दिनांक				

परीक्षा-परिणाम

विद्यार्थी का नाम : ....

प्रवेश.क्रमांक .... कक्षा................ वर्ग क्रमांक ....

क्रम	विषय	प्रथम परीक्षा		द्वितीय परीक्षा	
		कुल अंक	प्राप्त अंक	कुल अंक	प्राप्त अंक
१					
२					
३					
४					
५					
६					
७					
८					
९					
१०					
११					
१२					
	कुल अंक				
	परिणाम				
	वर्ग शिक्षक के हस्ता.				
	प्राचार्य के हस्ता.				
	अभिभावक के हस्ता.				
	परिणाम घोषित दिनांक				

हमारा उद्देश्य

संस्कार और ज्ञान प्रदाता गुरुकुल पुनः शुरू होंगे तभी देश के विद्यार्थियों का उत्थान होगा । विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करके उनको तेजस्वी, ओजस्वी, यशस्वी बनाने हेतु उनको स्कूली विद्या के साथ नैतिक, चारित्रिक, यौगिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान देना भी अत्यंत आवश्यक है । पंद्रह साल की आयु तक बच्चों में उद्यम, साहस, धैर्य, संयम, पराक्रम आदि जितने संस्कारों के बीज बोये जायेंगे उतने ही वे भविष्य में श्रेष्ठ नागरिक बन सकेंगे । इस हेतु भारतीय संस्कृति के मूल्यों पर आधारित शिक्षा-पद्धति की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए आधुनिक शिक्षा और वैदिक ज्ञान के सुंदर समन्वय से युक्त इस गुरुकुल की स्थापना की गयी है ।

गुरुकुल-शिक्षा के अंतर्गत आनेवाले सारस्वत्य मंत्र के जप, योगासन तथा प्राणायाम से बच्चों में एकाग्रता, स्मृतिशक्ति, निर्णयशक्ति, शारीरिक शक्ति और आत्मबल के विकास के साथ आंतरिक [illegible] शक्तियों का विकास होगा । इससे [illegible] ने सभी कार्यों में सफलता पाने में सक्षम [illegible]

संत श्री आसारामजी गुरुकुल, काशी (उ.प्र.)

दूरभाष : (0542) 2213781